कर्तव्य निर्वाह **शिक्षक दिवस (5 सितम्बर)**

अपना स्कूल 'दर्पण' : पुलिस की अलग विशेष भूमिका

— के.एस.एस. नायर

(यह देश के एक दूरवर्ती क्षेत्र में समाज के शिक्षा से वंचित वर्ग को शिक्षा देने के कार्य की एक अलग विशेष भूमिका में पुलिस द्वारा की गई अद्वितीय पहल है. सामान्यतः कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने का ध्यान रखने वाली पुलिस ने जरूरत मंद लोगों को शिक्षा देने में सहायता करने के हाथ आगे बढ़ाए हैं, आगे पढ़िये ...)

अप्रैल, 2006 में, बाड़मेर के तत्कालीन पुलिस अधीक्षक उमेश चन्द्र दत्त ने रामसर पुलिस थाने में 'दर्पण' के नाम से स्कूल चलाने की पहल की. उन्होंने यह स्कूल 10 छात्रों के साथ प्रारंभ किया था और अब वहां 186 छात्र पढ़ रहे हैं. इनमें 42% छात्राएं हैं, जो अपने आप में एक उपलब्धि है.

पांच शिक्षकों को वेतन देने, स्कूल तथा छात्रों के लिए लेखन-सामग्री, संगीत के उपकरणों, चटाइयों तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था करने के लिए *दर्पण* ने निधि एकत्र की. इस स्कूल को राज्य सरकार की सहायता या मान्यता नहीं मिली है, और मंगानियर तथा मिरासी समुदायों, जो रेगिस्तान क्षेत्र में पारम्परिक लोक गायक तथा भाट हैं, के बच्चों की राज्य में शिक्षा तक बहुत कम पहुंच है.

अपना स्कूल को सहायता की आवश्यकता है. इसे यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि इस स्कूल के छात्रों को अगले शैक्षिक वर्ष में प्रवेश मिल सके. इसका अर्थ यह हुआ कि *दर्पण* के लिए, यह सुनिश्चित करना अत्याधिक चुनौतीपूर्ण विकास लक्ष्य है कि प्रत्येक बच्चा स्कूल जाए और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह कि बच्चा वहां रह कर पढ़े. ग्रामीण राजस्थान के बच्चों की स्थिति भी वही है जो पूरे भारत के अन्य अधिकांश बच्चों की है वे अच्छी शिक्षा तथा अच्छी सुविधाओं से वंचित हैं. बच्चों के स्कूल छोड़ने की दर बहुत अधिक है और बच्चे पढ़ाई न छोड़ें, यह एक ऐसी बड़ी चुनौती है, जो शिक्षा नियोजकों को निभानी है.

इसके कारण का पता लगाना बहुत कठिन नहीं है. बल्कि अधिकारियों को यह जानने में समय लगा कि स्कूल में लड़कियों के लिए शौचालय बनवाए जाने के शीघ्र बाद, पढ़ाई बीच में छोड़ने वाली लड़कियों की दर कम होने लगी है, क्योंकि अपनी कक्षाओं के बीच से उठ कर दूर जाने में वे जो शर्म महसूस करती थीं, स्कूल में शौचालय बनने से उन्हें इस समस्या से मुक्ति मिल गई.

इसी तरह पुस्तकों, पेंसिल तथा ऐसी ही अन्य आवश्यक सामग्रियों का अभाव भी बच्चों द्वारा आगे पढ़ाई नहीं करने का एक कारण है. जब इन सामान्य बातों का ध्यान रखा जाता है तो यह सुनिश्चित हो जाता है कि ये छात्र अगले वर्ष की पढ़ाई के लिए स्कूल आएगा.

स्कूल में अगले वर्ष की पढ़ाई पर प्रत्येक छात्र पर 200/- रु. का और खर्चा. यह राशि कॉपियों, पाठ्य-पुस्तकों, पेंसिल, स्केल, इरेजर, स्केल, बैग तथा छात्रों की आवश्यकता की अन्य सामान्य वस्तुओं के लिए होती है.

इस समय स्कूल में 5 शिक्षक सेवारत हैं और उनके लगभग 11000/- रु. के मासिक वेतन के बिल का भुगतान *दर्पण* करता है. हमें और अधिक शिक्षक रखने होंगे, एक कम्प्यूटर देने की संभावना के अतिरिक्त बुनियादी आवश्यकताएं जैसे ब्लैक बोर्ड, चाक, उपयोग में आने वाली अन्य वस्तुएं, वाशरूम जैसी सुविधा, खेल के उपकरण आदि उपलब्ध कराने होंगे.

हम पिछले 6 वर्षों से लगभग 1.50 लाख रु. से अधिक राशि व्यय कर रहे हैं. हमें मंगानिआर बस्ती में एक दूसरा स्कूल खोलना होगा, जहां मुख्य रूप से संगीत की शिक्षा दी जाती है तथा अन्य सभी विषय में शामिल किए जाते हैं बच्चों की यह पहली पीढ़ी है जो स्कूल जाती है अपना स्कूल के छात्र उन समुदायों से हैं, जिन्हें निर्माण मजदूर बनने के लिए मजबूर किया जाता है, क्योंकि एक संगीतज्ञ के रूप में अब वे धन नहीं कमा सकते.

दर्पण का लक्ष्य स्कूल को सहायता देना जारी रखने का है. पांच शिक्षकों के वेतन पर औसतन आज की तरह, लगभग 40,000/- रु. वार्षिक और रु. 12000/- मासिक व्यय आता है.

शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए छह महीनों में एक बार प्रतिष्ठित स्कूल में भेजा जाता है. पिछली बार उन्हें अहमदाबाद स्थित महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय स्कूल में भेजा गया था. अप्रैल, 2012 में शिक्षकों को अतुल विद्यालय, वलसाड़ ने प्रशिक्षण दिया था. प्रशिक्षण के दौरान, शिक्षकों को, ऐसे स्कूलों में उपयोग में लाए जाने वाली शिक्षण पद्धति की जानकारी दी गई, ताकि वे इन पद्धतियों को अपना स्कूल में संभावित सीमा तक कार्यान्वित कर सकें.

(लेखक अहमदाबाद स्थित दर्पण के प्रशासक हैं.

ई-मेल : *admn@darpana.com)*

एक अच्छे शिक्षक को ज्ञान होना चाहिए कि अध्ययन के उस क्षेत्र, जिसके लिए वह जिम्मेदार है, में छात्रों की रुचि कैसे बढ़ाई जाए. उसे क्षेत्र में मास्टर होना चाहिए, वह अपने विषय में नवीनतम विकास से अवगत हो, वह ज्ञान का आकर्षक रूप से विस्तार करने वाला एक अध्येता पथिक हो. इतिहास अच्छाई और बुराई के बीच एक अनंत संघर्ष है.

- डॉ. एस. राधाकृष्णन